पूरण चन्द गुप्त

गीत

बिन पानी क्या तेरा?

पानी के सब ठौर ठिकाने
दिल्ली, मथुरा और बरसाने
जहाँ मिला पानी मानव को
पाया वहीं बसेरा
बिन पानी क्या तेरा।

प्राकृतिक संसाधन ऐसे
पानी मिलता था बिन पैसे
पूर्वज ही अपने अच्छे थे
प्रचुर नीर था डेरा
बिन पानी क्या तेरा

धरती का जो भी भूगोल
जल अमृत है जल अनमोल
जल के लिये युद्ध सम्भव है
मानव बने लुटेरा
बिन पानी क्या तेरा

प्राकृतिक संसाधन सारे
संरक्षित हों सभी हमारे
यह जल तो जीवन है सबका
क्या तेरा क्या मेरा
बिन पानी क्या तेरा

जल बिन कैसा कल?

सोच समझ कर नीर बहाओ
व्यर्थ नहीं इसको बिखराओ
सुनो मित्र एक पल
जल बिन कैसा कल

जनहित में जागरण उठाओ
सब मिल पर्यावरण बचाओ
आओ करें पहल
जल बिन कैसा कल

सभी करें हम आओ यह प्रण
बूँद-बूँद जल की संरक्षण
वरना होंगे विफल
जल बिन कैसा कल

जल अपने जीवन का वाहक
करते हम बरबादी नाहक
मानव तनिक सँभल
जल बिन कैसा कल

अमृत है प्राणी को पानी
चेत-चेत मूर्ख अज्ञानी
कर संकट का हल
जल बिन कैसा कल

जल मुक्तक

जीवित जन-जन है
धरती का धन है
जल बिन क्या होगा
जल ही जीवन है

पृथ्वी पर हलचल
आज भी है और कल
जल से ही हैं हम
अमृत है यह जल

खेत, गाँव, जंगल
बैल, गाय, ये हल
कहाँ बचेंगे सब
खत्म हुआ जो जल

थल सँवार अपना
कल सँवार अपना
जीवित रहना है तो
जल सँवार अपना

सब कुछ खोयेगा
कुछ ना बोयेगा
विनश गया जो जल
फिर तू रोयेगा।

संपर्क करें:
पूरन चन्द्र गुप्त
निवास-इन्द्रा नगर, गली नं. 5, जलेसर रोड
फीरोजाबाद-283 203 (उ.प्र.)
मो.नं. 09997181967